

SMT. GODAWARI DUTTA

Smt. Godawari Dutta is a renowned Mithila Painting artist and her contribution in this field is overwhelming for some of her practices are acclaimed world over. She has contributed in promoting the traditional art of country. She paints the character from Ramayana and Mahabharat and also on different rituals both on paper and cloth. Some of her paintings namely Trishul, Damru, Dhanush, Radha Krishna got applaud from art critics of repute.

2. Born on November 7, 1930 at village Bahadurpur near Laheriasarai, Darbhanga Bihar, Smt. Dutta was introduced to this art by her mother at a very tender age of 5 years under very difficult domestic conditions due to untimely demise of her father. She found refuge and solace in Mithila Paintings and understood the nuances of this art with dedication and perseverance. She achieved the depth and soon her fingers began to handle brush with ease and confidence. She has been imparting training and guidance to budding Artists till now.

3. Smt. Dutta faced very adverse circumstances on domestic level. She excelled in this field and held her solo exhibition at Jahangir Art Gallery, Mumbai followed by exhibition at Patna by BSHC in 1973, at Kolkata by Refugee Handicraft in 1974, Rotary club at Ranchi in 1974, Central Handicraft Emporium, Trivandrum in 1976, duet promotion programme at Chandigarth in 1977, at Dilli Haat, New Delhi and many more in the country. She has exclusively travelled abroad promoting this art and helped in establishing Mithila Museum, the only one outside the country i.e in Japan. She was invited to Japan 7 times for duration of 6 months each, during the year 1990-1994 to demonstrate and teach the Art. She participated in an event in Germany in 1985 and her paintings were exhibited later in the Museum of Decorative Art, in Paris. In 1988 a documentary film namely " Kalakar Namaskar" was based on her was telecast on Doordarshan, Delhi.

4. Smt. Dutta has received several awards and honours including All India handicraft exhibition Award 7 times during (1973-79), Bihar Masters Craftperson Award (1973), National Award by the Hon'ble President of India (1980), Shilpa Guru Award by the Hon'ble President of India (2006), Life Time Achievement Award (2013-14), Bihar Kala Award by the Hon'ble Chief Minister of Bihar (2014).

श्रीमती गोदावरी दत्त



श्रीमती गोदावरी दत्त एक जानी-मानी मिथिला चित्रकार हैं तथा इस क्षेत्र में आपका बहुत अधिक योगदान है। आपके कुछ चित्रों को पूरे विश्व में सराहा गया है। आपने देश की पारम्परिक कला को बढ़ावा देने में अत्यधिक योगदान दिया है। आपने कागज तथा कपड़े दोनों पर रामायण तथा महाभारत के किरदारों के और विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों से संबंधित चित्र बनाए हैं। त्रिशूल, डमरू, धनुष, राधाकृष्ण जैसे आपके कुछ चित्रों की प्रतिष्ठित कला समीक्षकों द्वारा सराहना की गई है।

2. आपका जन्म 7 नवम्बर, 1930 को गांव बहादुरपुर, निकट लाहेरीसराय, दरभंगा, बिहार में हुआ। आपको इस कला के इस क्षेत्र में 5 वर्ष की अल्प आयु में आपकी माताजी ने उस समय उतार दिया जब आपके पिता के असामयिक निधन के कारण आपके घर की स्थिति बहुत खराब चल रही थी। आपको मिथिला चित्रकारी में बहुत आनंद और शुकून मिला तथा आपने इस कला की बारीकियों को बड़े समर्पण और निष्ठा के साथ समझा। आपने इसमें महारथ हासिल कर ली और जल्दी ही आप बड़े ही शांत भाव और विश्वास के साथ ब्रश चलाना सीख गईं। आप उदीयमान कलाकारों को अभी तक प्रशिक्षण और मार्गदर्शन प्रदान कर रही हैं।

3. श्रीमती दत्त की घरेलू परिस्थितियां बहुत खराब थीं। आपने इस क्षेत्र में विशिष्टता हासिल की तथा जहांगीर आर्ट गैलरी, मुम्बई में अपनी सोलो प्रदर्शनी लगाई। इसके बाद 1973 में बीएसएचसी द्वारा पटना में, 1974 में रिफ्यूजी हैण्डीक्राफ्ट द्वारा कोलकाता में, 1974 में रोटरी क्लब द्वारा रांची में, 1976 में सेंट्रल हैण्डीक्राफ्ट एम्पोरियम द्वारा त्रिवेन्द्रम में, 1977 में चंडीगढ़ में ड्वेट प्रमोशन कार्यक्रम, दिल्ली हाट, नई दिल्ली में तथा देश में अन्य कई जगहों पर आपकी कला की प्रदर्शनियां लगाई गईं। आपने इस कला को बढ़ावा देने के लिए अनेक देशों की यात्रा की हैं तथा देश के बाहर जापान में एकमात्र मिथिला म्यूजियम की स्थापना करने में सहायता की है। आपको इस कला का प्रदर्शन करने तथा इसकी शिक्षा देने के लिए वर्ष 1990-1994 के दौरान 6-6 माह की अवधि के लिए जापान में 7 बार आमंत्रित किया गया। आपने 1985 में जर्मनी में एक कार्यक्रम में भाग लिया और बाद में आपके चित्रों की पेरिस में म्यूजियम ऑफ डेकोरेटिव आर्ट में प्रदर्शनी लगाई गई। वर्ष 1988 में आपके ऊपर बनाई गई डॉक्यूमेंट्री फिल्म "कलाकार नमस्कार" दूरदर्शन, दिल्ली पर प्रसारित की गई।

4. आपको अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं जिनमें 7 बार (1973-79) ऑल इण्डिया हैण्डीक्राफ्ट एग्जीबिशन अवार्ड, बिहार मास्टर्स क्राफ्टपर्सन अवार्ड (1973), भारत के माननीय राष्ट्रपति द्वारा नेशनल अवार्ड (1980), भारत के माननीय राष्ट्रपति द्वारा शिल्प गुरू अवार्ड (2006), लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड (2013-14), बिहार के माननीय मुख्यमंत्री द्वारा बिहार कला पुरस्कार (2014) शामिल हैं।